अंतरा-शब्दशक्ति

चाँद से आगे

कथा संग्रह

आरती तिवारी

चाँद से आगे

(कहानी संग्रह)

आरती तिवारी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-81-0

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - आरती तिवारी

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- प्रीति दुबे, नागपुर

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

chand se aage By Aarti tiwari

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरा कहानी संग्रह

चाँद से आगे

हमारे प्रेरणा स्रोत

पूजनीय
ससुर जी- श्री देवेंद्र नाथ तिवारी
एवम्
सास जी श्रीमती अमृता तिवारी के
श्री चरणों में समर्पित।

मैं जब से शादी होकर आई मैंने हमेशा इनके सानिध्य कुछ सीखा ही है। वे सदा शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करते। शिक्षा किसी भी तरह की हो चाहे कला, साहित्य, नाटक, गीत, संगीत जो भी विधा हो, सीखने और आगे बढ़ने के लिये वे परिवार में सभी को प्रेरित करते, अपने पूज्यजनों के आशीर्वाद से मैं यहाँ तक पहुँची हूँ। बड़ों का आशीर्वाद हमेशा हम पर बना रहे। शत्-शत् नमन।

अनुक्रमणिका

1.	पहचान	5
2.	गोद	6
3.	हाँ! मैं सिर्फ माँ	8
4.	लालबत्ती	10
5.	मिट्टी का दीया	12
6.	रिक्शावाला	14
7.	नियति	16
8.	पचास साल बाद	18
9.	छठी इंद्री का धोखा	21
10.	मृग मारिचिका	23
11.	हारी नहीं वह	24
12.	नकली दरोगा	27
13.	वीर बाजार	29
14.	मोमोज कल्चर	31

पहचान

लीला एक छोटे से शहर से दिल्ली आई एक साल पहले ही आई थी, दिखने में वह साधारण है, पर उसके चेहरे पर गजब का विश्वास दिखता है।

काम करने की लगन भी है, पहले यहीं नोएडा में एक रेडीमेट कपड़े की फैक्टरी में सुपर वाइजर का काम करती थी। कंपनी में सभी उसके काम से काफी खुश थे। मेहनत, लगन व अपने काम के प्रति ईमानदारी, यह उसकी सबसे बड़ी खासियत है, किसी भी काम को करने वह डरती नहीं। धीरे-धीरे वह मैनेजर के पद तक पहुंच गई। हर नये काम को सीखने की चाह, हिम्मत, साहस नयी चुनौतियों के लिए अपने आपको उसने मजबूत बनाया। दिन-रात की मेहनत से लीला ने अपने को इस मुकाम तक पहुंचाया कि आज वह दिल्ली जैसे बड़े शहर में खुद की एक कपड़ों की फैक्ट्री चला रही है। यह भी बहुत सरल नहीं था, बहुत कठिनाईयाँ थीं, सबसे बड़ी समस्या दिल्ली जैसे शहर में पैसों और जगह को लेकर थी, पर वह हिम्मत नहीं हारी, कम्प्यूटर व नेट से काम सीखा और आगे बढ़ती गई। कुछ अपनी बचत से कुछ सरकार से लोन लेकर उसने अपना खुद का कारोबार शुरू किया।

पहले पंद्रह आदमी काम पर आदमी रखे। सबसे बड़ी समस्या तब आई जब ब्रांडेड कपड़ों के बाजार में उसे अपनी फैक्ट्री के कपड़ों को बाजार की प्रतिस्पर्धा के हिसाब से क्वालिटी में खरा उतरना था और कपड़ों को बाजार में पहले से उपलब्ध कपड़ों से कुछ कम कीमत पर बेचना था। कपड़ों की गुणवत्ता अच्छे होने के कारण बाजार में कपड़ों की मांग बढ़ी। काफी बड़ा ऑर्डर मिला और कंपनी फायदे में चलने लगी। मुनाफा होने पर पहले अपना सारा लोन चुकाया। कंपनी का स्टाफ पंद्रह से पचास तक पहुंच गया। आज लीला गारमेन्ट के नाम से उसकी अपनी स्वयं की एक पहचान है। यह सब आगे बढ़ने की उसकी कड़ी मेहनत का परिणाम है। लीला गारमेंट्स की शहर में तीन फ्रेंचाइजी है। लीला को सरकार के सबसे कम उम्र की सफलतम महिला उद्यमी का पुरस्कार भी मिला है।

गोद

सोना की शादी शहर के एक बहुत जाने माने प्रतिष्ठित, धन-सम्पन्न परिवार में हुआ। बहुत ही अच्छा शालीन परिवार है, घर में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं है। सोना पढ़ीलिखी व संस्कारवान है, परिवार में सास, ससुर, एक ननद व देवर हैं । पति विशाल का कपड़ों का काफी बड़ा कारोबार है।

सोना भी पति विशाल के काम में उनका साथ देती है, सब कुछ सही चल रहा है। धीरे-धीरे सोना व विशाल की शादी को पाँच बरस हो गये, पता ही न चला। अब सोना और विशाल को महसूस होने लगा कि हमारे घर में भी बच्चे की किलकारी गूँजनी चाहिए। दूसरे दिन सुबह वे दोनों के पास गये। डॉक्टर ने कई तरह के जाँच लिखे, पति व पत्नी दोनों की जाँच के दौरान पता चला कि विशाल पिता नहीं बन सकते। यह बात जानकर सोना व विशाल अत्यन्त दुखी हुए। यह बात सोना व विशाल ने अपने तक ही रखी। परिवार में इस बात की किसी को भी नहीं दी। उन्होंने एक-दो डॉक्टरों से और सलाह ली पर उन्हें उम्मीद की कोई किरण नजर नहीं आई। उनका जीवन धीमी गति से चल रहा था। लेकिन अब वे दोनों पहले की तरह खुश नहीं लग रहे थे। धीरे-धीरे यह बात सोना के परिवार वालों ने भी महसूस की। एक दिन उचित समय देखकर सोना की सास ने सोना से पूछ लिया, क्या बात है सोना? तो सोना रोने लगी उसकी आँखों से झर-झर आँसू बहने लगे, बड़ी मुश्किल से अपने आप को संभाल पाई। सारी बात सुनने के बाद उनकी सास ने विशाल के पिता से बात की सुनकर वह भी बहुत दुखी हुए।

समय अपनी गति से आगे बढ़ता जा रहा था एक दिन विशाल की बुआ सोनीपत से दिल्ली अपने मोतियाबिंद का ऑपरेशन करवाने के लिए विशाल के घर आयीं। विशाल और सोना दोनों ने उनकी खूब देख-भाल की। बुआ जी भी लगभग एक महीने तक सभी परिवार के साथ रहीं। इस बीच उन्होंने भी महसूस किया कि सोना कुछ गुमसुम सी है, पहले जैसी हँसी नहीं है सोना के चेहरे पर। बुआ जी ने

सोना की सास से पूछ लिया क्या बात है, सोना पहले जैसी खुश नहीं लग रही, कुछ परेशान सी लगती है कोई बात तो नहीं। इतना सुन सोना की सास ने बुआ जी को सारी बातें विस्तार से बतलाई, सुनकर बुआ जी भी बहुत दुखी हुईं।

कुछ दिन बीते बुआ जी सोनीपत वापस चली गईं, पर सोना की याद आते ही उसका उदास चेहरा उनके सामने आ जाता। बहुत सोच विचार कर बुआ जी ने पहले अपने भाई व भाभी से बात की। यदि किसी बच्चे के गोद ले लिया जाय तो विशाल व सोना माता- पिता बन सकते हैं। यह सारी बात विशाल के पिता ने सोना व विशाल को बताईं। बहुत सोचने के बाद सभी परिवार वालों ने बुआ जी की बात पर सहमती वयक्त की। कुछ दिन पश्चात एक अनाथ आश्रम से एक बच्ची गोद ली। विशाल व सोना दोनों बहुत खुश थे।

गोद लेने के बाद सोना की खुशी के आंसू बह निकले कहने लगी, आज मैं माँ बन गई और विशाल पिता बन गए। सारा परिवार बहुत खुश हुआ। सभी ने बुआ जी की इस सोच को धन्यवाद दिया। बच्ची का नाम खुशी रखा गया। खुशी, सोना और विशाल के माता-पिता बनने की, खुशी, दादा-दादी बनने की, खुशी, एक बच्ची को माता-पिता मिलने की, और एक परिवार के पूरा होने की। सही मायनों में आज सोना सिर्फ माँ ही नहीं बनी थी बल्कि उसकी गोद भी खुशियों से भर गई थी।

हाँ! मैं सिर्फ माँ

पूजा आज रात भर सो नहीं पाई, बस करवट बदलते-बदलते ही सुबह हो गई। आँखें सोना तो चाहती थीं पर मन की बेचैनी उन्हें रोक रही थी। सात लाख रुपए!! यह तो बहुत होते हैं। अगले पांच साल लोगों के यहां खाना बनाऊँगी तब जाकर यह पैसे जुड़ेंगे। और एक साथ सात लाख रुपये! बाप रे बाप! बैंक में डालूँगी तो इस सात लाख रुपये के दस लाख बन जायेंगे। इतने में मदन ने चाय के लिए आवाज लगाई। मदन-पूजा चुपचाप चाय पी रहे थे कि मदन ने कहा- तो क्या सोचा है? ऐसे ज्यादा सोचने की बात नहीं है, बस तू हाँ बोल दे। नौ महीने की ही तो बात है, अपने दिन बदल जाएंगे। इतने रुपए कमाने में तो सालों लगते हैं और फिर ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता। भगवान ने दिया है तो छोड़ना नहीं चाहिए। साहब बहुत अच्छे लोग हैं, और अपना कुछ जाएगा भी नहीं। पूजा ने कहा -मैं थोड़ा सोच कर बताऊँगी। मदन काम पर चला गया। मदन एक साहब के घर पर ड्राइवर का काम करता है। अभी कुछ ही समय उसे वहाँ काम करते हुए हुआ। मालिक -मालकिन की शादी को पाँच साल हो गए पर बच्चे का सुख अब तक नसीब नहीं हुआ। डॉक्टरों का कहना है कि मालकिन के शरीर से तो नहीं, पर किराए की कोख का सहारा लेकर वे माता- पिता बन सकते हैं।

बीते कल की ही तो बात है जब उन्होंने मदन और पूजा को बुलाकर सब बात बताई, कहा तुम दोनों हमारी मदद कर सकते हो। हम तुम्हें कोई कष्ट नहीं होने देंगे सात लाख रुपए के अलावा नौ महीने तक पूजा का खाना खर्चा सब कुछ देंगे। मदन पहले ऑटो चलाता था पर पीने खाने की बुरी आदत के कारण हमेशा उसे तंगी रहती, और उधार लेकर काम चलाना पड़ता। गए महीने किसी से चालीस हज़ार रुपये उधार ले लिया और चुका नहीं पाया तो पुरानी ऑटो बेचकर उसके पैसे देना पड़ा और बचे पैसे भी दोस्ती यारी में उड़ा डाले। अब ड्राइवर का काम पकड़ा तो सात हज़ार रुपये महीने के मिलते हैं। पर जब से सात लाख रुपये की बात सुना

तो बड़े-बड़े सपने देखने लगा है। पूजा दिन भर लोगों के घरों में काम करती रही पर मन दुविधा में ही था। शाम को पूजा ने मदन से कहा अभी अपना लड़का तो तीन साल का हो गया है, तो मैं हाँ बोल देती हूँ। मदन तो खुशी से उछल पड़ा। उसी दिन शाम को वह साहब के घर चलने को बोलने लगा। चलो आज ही शाम को उन्हें भी खुश खबरी दे देंगे। शाम को दोनों साहब के घर पहुँच गए, उन्होंने कहा- कल डॉक्टरी जांच के लिए चलना और सब ठीक रहा तो साढ़े तीन लाख रूपय पहले और बाकी बच्चे के जन्म होने के बाद। नौ महीने साहब के फार्महाउस में बने क्वार्टर में रहना पड़ेगा। जाँच में सब कुछ ठीक था। कुछ दिनों बाद आगे की प्रक्रिया भी पूरी हो गई। रिपोर्ट में पॉजिटिव आने पर साहब ने पूजा के नाम का बैंक में खाता खुलवा दिया और आधे पैसे जमा कर दिए। खाना, फल, दवाई सब कुछ टाइम पर मिल जाता। पर पेट में पल रहे बच्चे को वह महसूस करती तो भूल जाती कि यह मेरा बच्चा नहीं है। दिन बीतते गए। आज सुबह से ही उसे पेट में दर्द है। मालिक-मालकिन उसकी एक आवाज पर खड़े हो जाते। समय पर अस्पताल पहुँची तो वह समय भी आ गया जब बच्चे रोने की आवाज सुनी। शरीर का दर्द तो कम हो गया पर मन बच्चे को गले लगाने के लिए तड़प उठा। धीरे से मदन से पूछा- क्या हुआ? तूने बच्चे को देखा क्या?मदन -हां! लड़का हुआ है। बिल्कुल मेम साहब की तरह गोरा चिट्टा। पूजा एक-दो दिनों में अपने घर वापस आ गई। बाकी के साढे तीन लाख रुपये भी उसे मिल गए। उसका जीवन तो बदल गया, पर आज भी वह सोलह अक्टूबर को अपने दूसरे बेटे के जन्मदिन पर ईश्वर से उसकी सलामती की दुआ माँगती है ।

लालबत्ती

शिवानी आज के जमाने की लड़की है, नई सोच समझ के साथ जिंदगी को ताल मेल बैठा कर जीवन को सही मायने में जीना उसे पसंद है। वह एक मेहनती व खुद्दार लड़की है, दिल्ली में ही पली बढ़ी है। उसका अपना खुद का ज्वेलरी शॉप है, साथ ही वह स्वयं ही ज्वेलरी डिजाइन भी करती है। लाजपत नगर में उसकी दुकान है। घर से जब वह दुकान पर जाती तो यह रोज ही देखने को मिलता कि लालबत्ती पर छोटे-छोटे गरीब बच्चे भीख माँग रहे हैं। कभी कोई महिला गोद में तीन, चार माह का बच्चा लिए हुए भीख माँग रही होती। कभी छोटे बच्चे तीन साल से लेकर पाँच-सात साल के बच्चों से माँ-बाप नट (करतब) दिखाने का काम करवाते हैं, मूँछ, ढाढ़ी बना कर एक ढोलक या बाजा सा लिए रहते हैं, गोल रिंग जिससे वह करतब दिखाते हैं, यही उनकी रोजी रोटी है,शिवानी अक्सर ही ऐसा, देखती मन में विचार आता कि ये बच्चे स्कूल जायें, पढ़ाई करें तो इनका भविष्य सुधर जायेगा, इनके माता-पिता को शिक्षा का महत्व बताना चाहिए, सरकार की उन योजनाओं के बारे में जानकारी देनी चाहिए। सरकार मुफ्त में शिक्षा दे रही है। शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है। यही सब सोचती जब वह उधर से गुजरती। एक दिन लाल बत्ती पर जब गाड़ी रूकी हुई थी तभी एक तीन साल का बच्चा लिए एक औरत आई, भीख माँगने लगी, पर शिवानी उसे पैसे नहीं देती। गाड़ी एक किनारे पर लगा वह उसे समझाती है, यह गलत है, बच्चों का भविष्य मत बिगाड़ो, उन्हें भीख मांगने की आदत मत सिखाओ आदि। कई तरह से समझाने की कोशिश करती है, ऐसा कई बार उसने प्रयास किया पर नतीजा कुछ भी नहीं निकला। शिवानी ने एक दिन उन बच्चों को काफी देर तक सरकार के मुफ्त शिक्षा योजना बतायी। यह भी बताया कि तुमको पढ़ाई के साथ-साथ अच्छा भोजन भी मिलेगा। तुम सब स्कूल जाना शुरू करो। कल अपने माता-पिता को भी बुला कर लाना यह कह कर शिवानी अपनी

शॉप पर चली गई । सोचा कल रविवार की छुट्टी रहेगी, दुकान बंद रहेगी तो मैं आकर इन सभी को फिर से समझाउँगी। वह घर से लाल बत्ती पर पहुँच कर अपनी गाड़ी कुछ दूरी पर बनी पार्किंग में रख कर आती है। वह उन सभी को एकत्रित करती है, उनको पढ़ाई के बारे में समझाती है। दिल्ली सरकार ने सभी बच्चों की पढ़ाई मुफ्त कर दी है जिससे कोई भी बच्चा पैसों की कमी के कारण स्कूल से वंचित न रह जाए दोपहर का भोजन, स्कूल की ड्रेस आदि सब वहां मिलेगा, दूर से चल कर आने वालों को साइकिल भी मिलेगी, और भी कई तरह की योजनायें व सुविधायें हैं। भीख मांगना गलत ही नहीं एक अपराध है। उन्हें समझा कर शिवानी घर आती है ।

दूसरे दिन जब वह अपने काम पर जाती है तो यह देख हैरान रह जाती है कि बच्चे आज उसके पास नहीं आते बल्कि वे दूसरी तरफ जाकर भीख माँग रहे हैं। बुलाने पर भी पास नहीं आये। अगली सुबह फिर वहाँ से गुजरती है, लेकिन उस जगह पर आज वे बच्चे नहीं दिखते। आगे बढ़ती है तो देखती है कि बच्चे यहाँ पर लाल बत्ती पर आकर भीख माँग रहे हैं। शिवानी को मनमें यह विचार आया कि इनको जानना ही नहीं सरकार इनके लिए क्या कर रही है इन्हें तो बस बिना मेहनत के पैसे चाहिए। यही सरल लगता है। फिर भी मुझे अपना प्रयास नहीं छोड़ना चाहिए। इनकी भी कोई गलती नहीं है, इसी माहौल में पले बढ़े हैं तो एकदम से किसी नयी बात को समझकर उसे अपनाना कठिन है। इसके लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता है। मुझे फिर कोशिश करना चाहिए, ऐसा सोच कर शिवानी अब हर रविवार लालबत्ती पर जाकर वहाँ के भीख माँगने वाले बच्चों को जमा करती। आसपास के पार्क में उन्हें ले जाकर स्कूल जाने के बारे में प्रेरित करती, कहती इससे तुम्हारे मां-बाप का भी फायदा है...।

मिट्टी का दीया

कंचन आज सुबह से ही बहुत खुश है, चेहरे पर यह झलक दिख रहा है। बहुत सालों के बाद उसका बेटा नितिन, बहू रितु व उनके बच्चे सोनू, पूजा, आरजू आ रहे हैं और बिटिया नीरा व उसके पति महेश व बच्चे आनी, बानी कनाडा से आ रहे हैं। बहुत इंतजार के बाद आज इस दीपावली पर सारा परिवार एक साथ होगा, यह सोच कर वह बहुत खुश हो रही है। आज मन में वही पुरानी याद दुहराने लगी, जब वह इस घर में नई-नई ब्याह कर आई थी, शादी के बाद जब उसकी पहली दीपावली थी कैसे सारा का सारा परिवार एक साथ मिलकर त्योहार मनाते, माँ जी कई तरह की मिठाई बनातीं, साथ ही साथ मुझे समझाती भी जातीं, देखो कंचन यह मिठाई ऐसे बनती है।

नमकीन, लड्डू, पेड़ा, गुलाब जामुन कहतीं यह अजय को बहुत पसंद है। मैं भी यह सब बहुत ध्यान से देखती। मुझे यह सब बनाना नहीं आता था। माँ जी बड़े प्यार से बनातीं व साथ ही साथ सिखलाती भी जातीं, इन सभी कामों में मेरे छोटे देवर विजय व ननद आशा भी साथ देते, पति अजय बैंक में थे, उनके पास समय कम होता फिर भी वह मॉजी के साथ थोड़ा बहुत हाँथ बँटाते थे। महीनों पहले घर की साफ सफाई, रंगाई पुताई का काम शुरू हो जाता था। चारों तरफ साफ सफाई और आस-पड़ोस में भी। पूरा शहर जिधर देखो रंगाई पुताई का काम चल रहा होता। मिठाई भी सभी के घरों में बनाई जाती। उस समय बाजार से खरीदने इतना प्रचलन नहीं था। दीपावली के कुछ दिन पहले से ही घर के दरवाजे के सामने रंगोली बनाई जाती। आस-पड़ोस के घरों के सामने भी रंगोली बनी होती। सभी का द्वार सजा रहता। धनतेरस से ही दीपावली पर्व शुरू हो जाता। माँ जी अपने हाँथों से फूलों की माला बनातीं। आम के पत्तों से तोरण बनाये जाते। धनतेरस तक सारा बाजार नई नवेली दुल्हन सा सज-धज जाता। बरतन की दुकानों पर भीड़,

सोने-चाँदी की दुकानों पर भी खचाखच भीड़। सस्ता जमाना था, फल, मिठाई मेवे की दुकानों की तो बात ही क्या? दूसरे दिन छोटी दीपावली पर घर के सभी सदस्य मंदिर जाते, मिट्टी का दिया जलाया जाता। घर के मुख्य द्वार पर माँ जी परिवार की रक्षा हेतु यम का दीपक द्वार जलातीं। दीपावली पर लक्ष्मी-गणेश की पूजा खील, खिलौना, बताशा और चारों तरफ दीये जलाये जाते। घर बाहर खेतों-खिलहानों में, पेडों के नीचे, पवित्र नदियों, तालाबों के किनारों पर दीप दान ऐसा सुंदर नज़ारा, अमावस की रात इतनी जग मग मानों इस रात धरती के आँचल में आसमान के सारे तारे सिमट कर धरती पर जगमग कर रहे हों।

पुरानी यादें इतनी सुखद थीं कि सोचकर वह मन ही मन खुश हो रही थी। अब पहले जैसी रौनक कहाँ? सब कुछ बदल गया इतने सालों में शरीर भी पहले जैसा साथ नहीं देता, पर खुशी इस बात की है कि हमारा पूरा परिवार एक साथ होगा। सभी मिलकर दीपावली मनायेंगे। सब कुछ समय के साथ बदल गया। अब रोशनी के लिए लोग रंग बिरंगी झालरें लगाने लगे हैं। बाजार में तरह-तरह के चाइना मेड सस्ते दामों वाली लाइटें, झालरें आ गई हैं। मिठाइयाँ भी लोग बाजारों से खरीदने लगे हैं। तरह-तरह के बारुदी पटाखे जो कि वातावरण को प्रदूषित करते हैं। नहीं बदला तो उस छोटे से मिट्टी के दीये का वजूद। बिना इस दिये की दीपावली कैसी? यह सदियों से हमारी परंपरा में चली आ रही है जो हमें यह बताती है कि मिट्टी का यह दिया हमेशा जलता रहे और हमें अपनी मिट्टी से जोड़े रखेगा। जैसे आसमॉ तारों के बिना सूना लगता है वैसे ही हमारी यह दीपावली का त्योहार इन मिट्टी के दीयों के बिना सूना है। हज़ारों दीपक की रोशनी जो अमावस के अंधेरे को मिटाकर हमें एकता का संदेश देते हैं |

रिक्शावाला

अनया ऑफिस की सीढियों से नीचे उतर रही थी कि अचानक उसका पैर फिसल गया, नीचे की पाँच छह सीढ़ी ही बची थी। लेकिन वह उठ नहीं पा रही थी। आस-पास के के लोगों ने सहारा देकर ऑटो में बैठने में मदद की। दर्द बहुत होने के कारण वह पास के ही नर्सिंग होम में चली गई, उसके साथ उसकी मित्र नैन्सी भी थी। शाम का समय डॉक्टर सात बजे मिलेंगे, तब तक इंतजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। उसी बीच एक और गंभीर केस आ गया। अनया का दर्द और सूजन बढ़ता जा रहा था। करीब एक घंटे बाद उसका नंबर आया डॉक्टर ने देखा कहा एक्सरे करवा लो तब देखते हैं। एक्स रे देखने पर डॉक्टर ने बताया कि पैर की हड्डी में हेयर लाइन क्रैक है 1 सप्ताह के लिए सिंथेटिक प्लास्टर लगाना पड़ेगा। सब कुछ पूरा होने तक रात के करीब दस बज गये। घर सभी चिंतित हो रहे होंगे । आकाश को भी आते-आते रोज साढ़े दस बज जाते, ऑफिस काफी दूर होने के कारण आने में डेढ़ घंटा लगता । घर पर माँ और बाबू जी थे उनको अनया ने फोन करके बताया कि वह भी साढ़े दस बजे तक घर पहुंच जाएगी। रात होने कारण सवारी मिलना कठिन हो रहा था, ऑटो वाले जाने को तैयार नहीं हो रहे थे। अनया नर्सिंग होम के सामने खड़ी इंतजार कर रही कि कोई भी सवारी मिले तभी एक रिक्शा वाला दिखा। अनया ने आवाज दी वह पास में आया बोला कहाँ चलना है? अनया ने कहा शकरपुर स्कूल ब्लाक। ठीक है, अनया और नैन्सी रिक्शे मैं बैठ जाती हैं । उसका घर भी पास ही है। जब वह घर के पास पहुंचने वाली थी तभी रिक्शे वाले ने पूछा कहाँ उतरना है?

बस थोड़ी ही दूर पर भैया, सीधे हाथ की ओर ।

रिक्शावाला- मैडम हिम्मत रखो सब ठीक हो जायेग। समय लगेगा। मुझे देखिए, हाथ में चोट गई थी। किसी से मेरी लड़ाई हो गई थी, उसमें मेरे हाथ की हड्डी टूट गई थी, अंदर प्लेट लगी है पर पेट की खातिर रिक्शा चला रहा हूँ, घर पर दो छोटे बच्चे, एक बूढ़ी माँ हैं, पिता गुजर गये हैं। इतने में घर आ गया अनया व नैन्सी दोनों उतर गईं।

रिक्शावाला - अपना ध्यान रखना मैडम जी मैं आपको एक दवाई बताता हूँ। प्लास्टर खुलने पर हड्डीजोड़ पौधा पीस कर लगा लीजिएगा। हल्दी वाला दूध पीयें। जल्दी से ठीक हो जायेंग।

अनया ने उसे पैसे दिये और अपने घर की ओर बढ़ गई। अंदर जाते ही माँ घबराई हुई पूछा यह क्या हुआ...? इतने में दूसरे कमरे से बाबू जी भी आ गये। मैं सब कुछ बता ही रही थी कि इतने में आकाश भी ऑफिस से आ गये, मुझे इस हालत में देख कर पूछा-कैसे हुआ?

आकाश -तुमने मुझे फोन क्यों नहीं किया?

बोली आप उतनी दूर से क्या करते, सिवाय परेशान होने के। बस थोड़ी सी चोट आयी है। ऑफिस की सीढ़ियों से उतरते समय मैं फिसल गई। साथ में नैन्सी थी इसलिए आपको परेशान नहीं किया। डॉक्टर ने पांच दिन की दवा दी है और आराम बताया है। दो दिन बाद शाम को 4 बजे के आस-पास अनया के घर की कॉल बेल बजी, माँ जी ने दरवाजा खोला । एक रिक्शा वाला दिखा उन्हें। पूछा क्या काम है? बोला परसों रात को मैं मैडम जी को यहीं छोड़ कर गया था, उनके पैर में चोट आयी है, घर तो यही लगता है, माँ जी ने आकर बताया कि एक रिक्शा वाला आया है। तुमको पूछ रहा है। अनया हिम्मत करके उठती है, बाहर जाकर देखा तो वही रिक्शा वाला जो परसों छोड़ कर गया था। पूछा भैया जी क्या काम है? रिक्शावाला- मैडम ये आपके लिए हड्डीजोड़ की औषधी लाया हूँ इसे लगा लीजिएगा, जल्दी से ठीक हो जायेंगी और साथ में पौधा भी लाया हूँ, अपने घर के आँगन या गमले में लगा लें। बहुत काम आता है यह। अनया ने वह पौधा ले लिया, उसको शुक्रिया अदा किया, वह रिक्शे वाले को कुछ पैसे देना चाहती थी, पर हाथ जोड़कर रिक्शेवाले ने कहा- मैडम जी इसकी कौनों जरूरत नहीं है। आदमी ही आदमी के काम आता है। जब किसी को ऐसी परेशानी आये तो आप भी इस पौधे से उसकी मदद कर देना और वह चला गया। पर अनया सोचती रही, उसके अंदर छिपे मानव के लिए सहयोग और सेवा भाव, वह भी नि:स्वार्थ!! ऐसे लोग अभी भी हैं?

नियति

आज माँ व बाबू जी के चेहरे पर कुछ संतोष दिख रहा है, एक बहुत अहम फैसला लिया है दोनों ने मिलकर। आगे सुरभि की किस्मत है...क्या होगा ? पर आज यह निर्णय लेने के बाद सभी के चेहरे पर से उदासी, मायूसी हटने लगी।

माँ कहने लगी याद है जब सुरभि का विवाह रूपम से हुआ, कितनी खुश थी, सुरभि होती भी क्यूँ ना? बहुत अच्छा घर था परिवार के लोग बहुत पढ़े लिखे व संस्कारी। रुपम का अपना नर्सिंग होम शहर के अच्छे और नामी अस्पतालों में गिना जाता है। रुपम हार्ट सर्जन हैं । वहीं सुरभि की मुलाकात रुपम से हुई थी। सुरभि वहीं पर स्त्री रोग विशेषज्ञ है। अभी कुछ दिन पहले ही यह अस्पताल ज्वाइन किया है। उसने ग्वालियर शहर से मेडिकल की पढ़ाई पूरी कर आगे की पढ़ाई के लिए लंदन चली गई थी। आने पर उसने डॉ रुपम के नर्सिंग होम में गायनिक विभाग में है। डॉ सुरभि और रुपम को साथ -साथ काम करते हुए लगभग तीन बरस हो गये। डॉ. रूपम अपने पेशे संबंधित कार्य के कारण दूसरे देशों में भी जाते रहते थे। बहुत नाम है डॉ. रुपम का। दोनों परिवारों की आपसी सहमति से रिश्ता तय हुआ, कुछ महीने बाद ही दोनों की शादी होने वाली है ।

सारी तैयारी दोनों परिवार के लोग मिलकर कर रहे थे। सब कुछ बहुत अच्छा रहा। नर्सिंग होम भी बहुत बढ़िया चल रहा था। रुपम व सुरभि बहुत अच्छे डॉ.माने जाते। इनका व्यवहार भी मरीजों के प्रति बहुत प्रेम व धैर्य वाला था। डॉ़ रूपम तो अपने मरीजों के लिए भगवान जैसे थे। सैकड़ों मरीजों का सफल ऑपरेशन किया, सभी नई जिंदगी पाकर डॉ. रुपम को दुआयें देते। इसी बीच सुरभि व रुपम के घर में इनकी प्यारी सी बिटिया ने जन्म लिया। प्यार से सब पंखुड़ी बुलाते, सच में पंखुड़ी भी अपने नाम के अनुरूप गुलाब की पंखुड़ियों की तरह से है। अपने दादी, दादा जी को वह बहुत प्यार करती, वे लोग भी जैसे पंखुड़ी पर अपना सारा प्यार लुटाते। बड़ा हँसता खेलता परिवार था, पर यह क्या? पल भर में जैसे सुरभि की दुनिया ही बदल गई। रुपम अपने काम के सिलसिले में बाहर गये हुए थे, वापसी में आते समय उनकी हवाईजहाज़ दुर्घटनाग्रस्त हो गई। कई यात्रियों की उसमें जान चली गई उसमें से एक डॉ. रुपम भी थे।

यह समाचार सुनते ही माँ व बाबू जी के तो जैसै बेहोश हो गये, बड़ी मुश्किल से उनको संभाला गया। सुरभि को तो यकीन ही नहीं हुआ सुनकर। कैसी बुत सी बन गई। पंखुड़ी पाँच साल की छोटी सी मासूम सी बच्ची वह इन सबसे बेखबर उसको कैसे बतायें? कैसे समझायें? उधर सुरभि के परिवार वाले भी सुनकर हतप्रभ रह गये। नर्सिंग होम तो जैसे बेजान हो गया। किसी को भी समझा पाना उस वक़्त बहुत कठिन हो रहा था। पर विधि के विधान के आगे सभी को नतमस्तक होना पड़ता है।

पल भर में घर की सारी खुशी कहीं खत्म गईं। रूपम अकेले बेटे थे, माँ बाबू जी गुमसुम से हो गये। सुरभि को भी समझा पाना मुश्किल हो रहा था। धीरे-धीरे समय बीतता गया अब घर और नर्सिंग होम की सारी जिम्मेदारी सुरभि के ऊपर आ गई। कभी-कभी पंखुड़ी भी पापा के लिए जिद करती, उसे कोई कैसे समझाये? बस किसी तरह से दिन आगे बढ़ रहे थे, पर कोई खुशी नहीं सब कुछ बुझे हुए मन से करते जाना। जीवन जीना यही दिनचर्या रह गई थी। उसी नर्सिंग होम में डॉ.प्रशान्त जो कि डॉ.रूपम के सहयोगी व अच्छे मित्र भी हैं, उनका घर पर पहले भी कभी-कभी आना होता पंखुड़ी उनसे काफी घुली मिली रहती। अब पंखुड़ी के कारण डॉ. प्रशान्त का आना थोड़ा अधिक हो गया। वह समय मिलने पर माँ व बाबू जी के साथ भी समय बीताते, उनका ख्याल भी रखते शायद वे उनमें रूपम को देखते। वक्त गुजरता गया पुराने घाव कुछ भरने लगे। माँ-बाबू जी को प्रशान्त बहुत अच्छे लगते, वह भी उनका बहुत ध्यान रखते । एक दिन माँ व बाबू जी ने किसी बात चर्चा करते हुए प्रशान्त से सुरभि के बारे में बात शुरू की, कैसे आगे का जीवन बीतेगा? पूरी जिंदगी पड़ी है। साथ ही यह बच्ची पंखुड़ी हर समय पापा को याद करती रहती है। आपसे क्या छिपा हुआ है, डॉ. प्रशान्त क्या आप हमारी सुरभि से विवाह करके उसे अपनाएंगे।

डॉ. प्रशान्त कुछ पल सोचकर बोले आप लोग सुरभि की भी राय ले लें, मैं तैयार हूँ । माँ बाबू जी ने सुरभि को भी समझाकर राजी किया। आज माँ व बाबू जी को अपना रुपम मिल गया। प्रशान्त के साथ सुरभि व पंखुड़ी दोनों बहुत खुश रहेंगी। शायद नियति यही थी।

पचास साल बाद

अंजू कुछ दिन पहले ही आगरा से दिल्ली आई है उसके पति आर्मी में मेजर हैं, वह धौला कुआँ के पास रहती है। एक दिन वह कनाट प्लेस किसी काम से आई हुई थी, सर्दी का दिन, हल्की गुनगुनी धूप, यूँ ही पैदल चलना बड़ा सुकून दे रहा था। चलते-चलते वह थापर के शो रूम तक पहुंच गई वहाँ सेल लगी हुई थी, फरवरी का महीना दिल्ली में मौसम बहुत हल्की गुलाबी ठंड होती है, बहुत आनंद आ रहा था, साथ में बेटा भी था, दोनों शो रूम में गये, गरम शाल, स्वेटर, मफलर, टोपी, लोई आदि खूब जमकर खरीददारी की, इधर आना भी कम हो पाता था, स्टोर से निकल खादी ग्राम उद्योग की तरफ जा रही थी कि अंजू को अपनी सहेली वाणी वहीं से गुजरते हुए मिल गई, अरे तुम कैसे? दिल्ली में आना कैसे हुआ? यहीं मेजर साहब का तबादला हो गया है, हम धौला कुआँ के पास आर्मी केन्ट में रहते हैं, तुम बताओ कैसी हो? संदीप कैसा है? बेटी कैसी है?

वह चुप रही, थोड़ी खामोशी के बाद बोली, फिर किसी दिन मिलते हैं अंजू, मेरा काम का वक्त हो रहा है, मैं यहीं बिंदल के शो रूम में काम करती हूँ, तुम मेरा फोन नंबर ले लो, फिर मिलते हैं रविवार को मेरी छुट्टी होती है तब मिलते हैं तुम मेरे घर का पता ले लो यह मयूर विहार फेज2 पॉकेट2-32बी, अच्छा अंजू मैं चलती हूँ, फिर हम जल्दी ही मिलते हैं, बहुत सारी बातें करनी है, अंजू अपने बेटे के साथ घर आ गई पर वह
रास्ते भर वाणी की खामोशी को लेकर बेहद परेशान थी। वाणी जो हमेशा चहकती रहती थी वे दोनों बचपन की सहेलियाँ हैं। जहाँ अंजू थोड़ी चुप-चुप रहती वहीं वाणी तो जैसे हर समय खिले फूलों की तरह महकती चहकती। कॉलेज का वार्षिक प्रोग्राम हो या कोई भी अवसर बिना वाणी के सब अधूरे लगते, आवाज तो ऐसी सुरीली कि गाना सुननेवाला तारीफ करते ना थके। वाणी पढ़ाई में बहुत होशियार,

दिखने में साधरण पर बड़ी-बड़ी आँखें उसे बहुत खूबसूरत बनाती। हर एक से स्नेह रखने वाली सी बस अपने काम से मतलब रखने वाली। हम दोनों ने एक साथ अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. किया। वाणी यहीं मेरठ शहर से है। मैं पंजाबी परिवार से हूँ और वाणी अग्रवाल परिवार से। दोनों ही अलग-अलग परिवेश से पर हमारी दोस्ती में कुछ भी आड़े नहीं आया। बचपन से कॉलेज तक एक साथ पढ़े, फिर मेरी शादी हो गई। आर्मी में पति के होने के कारण हमारी मुलाकात कम ही हो पाती। इसके बाद वाणी की शादी भी हो गई। उसके पति का यहीं करोलबाग दिल्ली में होल सेल का काम है। बस इतना ही जान पायी थी। शादी के बाद फिर मुलाकात भी नहीं हुई, इधर मेरा भी घर परिवार और इनका तबादला होता रहा, हम भी कभी अजमेर, पुणे, भटिंडा। बेटा रूड़की से इंजीनियरिंग कर रहा है। इन सबके के बीच सहेलियों से बातचीत, मुलाकात न हो पायी। आज इतने सालों के बाद वाणी से मुलाकात और वो भी इसी शहर में। फिर से मिलने का मन कर रहा है। जल्दी ही मिलने का मन बनाया।

एक दिन मैंने वाणी को फोन किया, मिलने के लिए। उसके बताये पते पर मैं छुट्टी के दिन गई, वह घर पर ही थी। बड़े करीने से घर सजा हुआ था। मन को बहुत अच्छा लग रहा था। मैंने ही बात आगे बढ़ाई, पूछा संदीप कैसे हैं? बच्चे अब तो काफी बड़े हो गये होगें।

बोली हाँ! बैठ, आराम से बातें करते हैं, इतने में वह चाय बना कर लाई, कुछ नमकीन, समोसे भी। हमने साथ में चाय पी। कहा समोसे तो बहुत स्वादिष्ट हैं।

बोली यहाँ पर बहुत मशहूर है, बारिश के दिनों में भी लाइन लगी रहती है, करीब एक घंटे हो गये पर घर में कोई भी सदस्य नहीं दिख रहा था।

मैंने कहा -संदीप कब तक आते हैं ?

थोड़ी देर चुप रहने के बाद कहने लगी- संदीप यहाँ नहीं रहते। मैं यहाँ अकेले ही रहती हूँ। पाँच साल हो गये।

मैंने पूछा- क्या हुआ? यह सब कैसे?

तो कहने लगी, शादी हुई फिर कुछ दिनों के बाद बेटा फिर दो साल के बाद बेटी, सब कुछ ठीक चल रहा था, बिजनस भी सही से चल रहा था, परिवार में थोड़ा बहुत तो कुछ न कुछ लगा रहता। मैं किसी भी बात पर ज्यादा ध्यान नहीं देती थी। घर के काम व बच्चे, कब समय गुजरता चला गया पता ही न लग पाया। बेटा अपनी एमबीए की पढ़ाई पूरी करके अहमदाबाद में ही नौकरी कर रहा है। बेटी अपनी मेडिकल की पढ़ाई यहीं दिल्ली में ही कर रही है। पिछले कई सालों से संदीप का रवैया कुछ बदला-बदला सा रहता था, मैंने बहुत गंभीरता से कभी भी नहीं लिया, बात-बात पर गुस्सा होना, किसी बात का सही जवाब नहीं देना,फिर भी मैं बच्चों की खातिर चलाती रही, अब दोनों बच्चे बड़े हो गये हैं उनके सामने भी, वही सब करना! मैं कमाता हूँ, सब मेरा है, और जब कुछ मुझे किसी को देना हो तो, वही झिक-झिक, चिक-चिक। इसका बच्चों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ने लगा। वैसे मेरे दोनों बच्चे काफी समझदार हैं, फिर भी कहीं न कहीं इसका प्रभाव बच्चों के मन मस्तिष्क पर असर कर रहा था और मेरा अपना आत्म सम्मान भी, अब यह और सहन नहीं कर पा रहा था। मन बहुत आहत हो गया तब मैने यह निर्णय लिया, मैं अब अलग रहने लगी हूँ, बिना किसी विरोध के। मैं उनसे कोई आर्थिक सहायता भी नहीं लेती, अलग रहने का फैसला मेरा था, बच्चे आते रहते हैं छुट्टियों में। अब दोनों अपना कैरियर शुरू कर चुके हैं, मैं भी अब खुले आसमान में साँस ले पा रही हूँ। संदीप पर मैं कोई दबाव नहीं डालना चाहती थी मजबूरियों का। मुझे दया नहीं सम्मान चाहिए, जो साथ रह कर संभव ना था। फिर इस निर्णय के साथ मैं आगे बढ़ गई। उम्र के पचास साल में यह कदम मुझे सही लगा, बहुत मौन व खामोशी के साथ अपनी एक अलग पहचान के साथ आगे बढ़ना।

छठी इंद्री का धोखा

नरायन एक हट्टा कट्टा नौजवान, आकर्षक व्यक्तित्व, रुपए में बारह आने झूठ, मिलाकर चलने वाला, बड़े-बड़े सपने लेकर मुंबई पहुंच गया। ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं था या कह लो पढ़ने की कभी इच्छा ही नहीं हुई। किताबें खुलते ही मन बड़ा आदमी बनने के सपने देखने लगता। मतलब स्कूल जाना समय की बर्बादी के अलावा कुछ नहीं, पर पिता की मार का डर और बारहवीं भी नहीं हो पाया तो गाँव के गाँव में रहकर खेती करनी पड़ेगी। सपना मुंबई का और वहाँ मुंबई तो जैसे उसके लिए बाहें बिछाए खड़ी है। पर बड़े-बड़े सपने उसे कभी चैन से पढ़ने नहीं देते। मन कहता बड़ा आदमी बनने के लिए ही पैदा हुआ हूँ। नरायन ने कॉलेज की पढ़ाई के लिए पास के शहर में एडमिशन ले लिया। घर से महीने के रुपए मिल जाते, पर नरायन कॉलेज न जाता न रुपए उड़ाता,उन्हीं में से कुछ रूपए लड़कों को ब्याज पर देता। पैसे बढ़े तो टैक्सी किराए पर चलाने लगा। कमाई बढ़ी तो सपने नई गाड़ी का उड़ान भरने लगे। गांव जाता तो घर में यही बताता कि अब दूसरा साल है । पिता कहते बस एक साल की बात है, मन लगाकर पढ़ाई करो उससे ही तुझे अच्छी नौकरी मिलेगी। वह हाँ कह देता मतलब अगले एक साल कॉलेज का भी झूठ बनाए रखना था। परेशानी तो तब हुई जब कुछ महीनों बाद नरायन के पिता एक दिन उसके कमरे पर पहुँचे तो दोस्तों ने बताया कि नारायण तो कॉलेज में पढ़ता ही नहीं है, बल्कि उसका तो टैक्सी का धंधा है। नरायन को देखते ही पिता का गुस्सा फूट पड़ा, नालायक! हमें कभी अपना मुँह मत दिखाना, क्या-क्या सपने देखे थे? तू भी मेरी तरह अनपढ़ ही रह गया।

नारायण ने सोचा जब पता चल ही गया है तो यहाँ रहकर समय बर्बाद करने से अच्छा मुंबई निकल जाऊँ। जाने से पहले गाँव होकर गया, माँ ने पिता से छिपाकर रखे कुछ रुपए नया काम शुरू करने के लिए उसके हाथ में थमा दिए। मुंबई में उसने कई कामों में हाथ डाला, पर कोई फायदा नहीं हुआ उल्टे जमापूँजी लेकर

चला था वह भी खाली हो गई। उसने रेलवे स्टेशन पर गाड़ियों का स्टैंड ठेके पर ले लिया, कमाई भी, लालच भी, पार्किंग के बाहर लगी बाहरी गाड़ियों को शिकायत कर उठवा देता फिर उनसे पैसे ऐंठता। नरायन को इससे भी ज्यादा पैसे कमाने थे, उसने एक नए काम में हाथ डाला, हॉलमार्क के सोने के जेवर छोटी दुकान से लेता और फिर उसे मशीन से चेक करवा कर सुनार को पुलिस का भय दिखाकर बड़ी रकम ऐंठता। साल दो साल में उसने ऐसा करके लाखों रुपए इकट्ठे कर लिए। एक नई कार ले ली। अच्छे फ्लैट में रहने लगा, जहाँ लोग अब उसे सेठ नरायन के नाम से जानते लेकिन अभी भी वह अपने पिता के नजरों से नजरें मिलाकर बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता था। घरवालों ने इस बीच उसकी शादी भी अच्छे पैसे वाले घर में कर दी।

कल का वह नरायन खोने लगा और सेठ नरायन लोगों के सामने, पर पुलिस के भय से अब अगला पड़ाव उसने दिल्ली रखा। शहर नया, काम नया, उसकी आड़ में पुराना भी। महँगी गाड़ी चलाना, अमीर दिखने की इच्छा तो पूरी हो रही थी पर पैसे की चाहत अभी भी अधूरी थी। उसने रुपए देकर कई सड़कों और पुल के ठेके ले लिए और उन्हें अपनी मिलावटी इच्छा से बना भी दिया। अब सेठ नरायन शहर का जाना पहचाना नाम था। समय के साथ दो लड़कों का पिता भी बना। बच्चे पढ़ने में अच्छे थे और नरायन कभी नहीं चाहता था कि उसके बच्चे उसके बनाए हुए रास्तों पर कभी चलें। उस दिन तेज बारिश हो रही थी बड़ा बेटा आहान स्कूल बस से निकला ही था कि रास्ते में सड़क धँस जाने के कारण संतुलन बिगड़ने से, सामने बड़े पेड़ से गाड़ी टकरा गई, जिसमें दो बच्चों की मौत हो गई, उसमें नरायन का बेटा अहान भी था। दुर्घटना की खबर मिलते ही नरायन पगलाया हुआ वहाँ पहुंचा, पर देर हो चुकी थी। अस्पताल जाने का मौका भी नहीं मिला। यह वही सड़क थी जिसका कॉन्ट्रैक्ट नरायन ने लिया था।

आज उसे समझ में आ रहा है आदमी की शुरुआत क्षण में ही होती है और क्षण में ही उसका अंत।

मृग मारिचिका

तीन पुनिया गाँव रेलवे स्टेशन से थोड़ी ही दूर है, गाँव क्या कस्बा है, वहीं राधे श्याम यादव का पाँच भाईयों का परिवार है, सभी भाई एक साथ रहते हैं, उनका गाँव शहर के पास होने के कारण एक विकसित है। काफी समय से बिजली की सुविधा भी है। उपजाऊ जमीन, सिंचाई के साधन कुल मिलाकर जमीन सोना उगलती है। पास ही थोड़ी दूर पर सरकारी स्कूल भी है। हाट बाजार में सभी जरूरत की वस्तुयें मिल जाती हैं, कॉलेज की पढ़ाई के लिए बाहर जाना पड़ता है।

परिवार का एक सबसे भाई घनश्याम यादव शहर पढ़ने के लिए आया। वह शुरू से पढ़ाई में बहुत अच्छा था। कॉमर्स से ग्रेजुएशन कर उसने एमबीए की परीक्षा दी, जिसमें उसका चयन अहमदाबाद के लिए हुआ। एमबीए के कोर्स का कोर्स पूरा कर उसने एक साल तक प्राइवेट कंपनी में नौकरी की लेकिन पैकेज उसकी पसंद का ना होने के कारण फिर उसने दूसरी कंपनियों में भी थोड़ी वक्त के लिए काम किया। फिर उसने अपनी छोटी सी फर्म बनाई। कड़ी मेहनत करके अपने काम को बहुत आगे बढ़ाया। आज शहर के बड़े उद्योगपतियों में उसकी गिनती है। उसके दो बेटे, एक बेटी हैं। बच्चों को ऊँची शिक्षा के लिए अमेरिका भेजा जिससे बच्चे अपने पिता के कारोबार को और आगे ले जायें। बेटों ने भी व्यवसाय को आगे बढ़ाया। दोनों बेटे बिजनस में पिता से भी आगे निकले, कल तक जो कंपनी तीस करोड़ की थी, आज वह कंपनी एक सौ पचास करोड़ के सालाना टर्नओवर की कंपनी बन चुकी है।

घनश्याम ने अपने तीनों बच्चों की शादी बड़े घरों में कर दी। सभी का अपना परिवार है। कारोबार बाहर के देशों में भी फैला हुआ है। अब धीरे-धीरे घनश्याम सत्तर की उम्र पार करने वाले हैं। शरीर में भी डायबीटीस ने धावा बोल दिया, पर वह जीवट होने के कारण अभी भी कारोबार संभाले हुए हैं। अब उनकी दूसरी पीढ़ी के बच्चे भी पढ़ाई के बाद अपना कारोबार संभालने के योग्य हो गए हैं। वे भी पिता और दादा के साथ काम में हाथ बटाने की कोशिश करते हैं।

बंगला, गाड़ी, नौकर-चाकर, सुख-सविधा क्या कुछ नहीं? पर पैसा-रूपया अधिक होने बाद भी कभी-कभी आदमी और अधिक की चाह में अपना संस्कार भुला देता। अच्छे बुरे की समझ भी ताक पर रख कर काम करता है। यही हाल घनश्याम

यादव के परिवार का भी हुआ पैसे की चकाचौंध के आगे कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। ना ही अपने गाँव गये, ना बच्चों को ले गये। केवल पैसा कमाना जीवन का उद्देश्य यही रह गया था। इन सब के बीच कब पारिवारिक ताना बाना टूटता गया पता ही न चला। पर अब दोनों बेटे अपना अपना कारोबार अलग रखना चाहते हैं, एक बेटा विदेश में बसना चाहता है। बेटी भी दामाद के साथ लंदन चली गई। अब घनश्याम व उनकी पत्नी हीरा बस दो जन ही भारत में रहेंगे। गाँव कभी मुड़कर नहीं देखा था। आज रूपये पैसे होने के बाद भी अपने आपको बहुत अकेला व असहाय महसूस कर रहे हैं। बस यही सोच कर बहुत दुखी हो रहे हैं किस मृग मरीचिका को पाने में मैने अपने पूरे परिवार को अपनों से बहुत दूर कर दिया। अकेले इस शहर में आया था, आज फिर अकेला, काश! मैनें बच्चों को परिवार का मतलब व आपसी प्रेम संस्कार भी सिखाया होता तो तीन में से कोई एक तो मेरे पास रहता।

हारी नहीं वह

निहारिका व इला दोनों की मुलाकात एल.एल.बी.की पढ़ाई के दौरान हुई, दोनों कॉलेज परिसर में मिलतीं। धीरे धीरे एक-दूसरे से पहचान बढ़ती गई। निहारिका ने बातों ही बातों में पूछा तुम कहाँ रहती हो?

इला ने कहा- "मैं सिविल लाइन में रहती हूँ।"

और तुम- मैं भी थोड़ी ही दूर लाल चौक पर रहती हूँ। अरे तब तो हम पास में ही रहते हैं। अब दोनों की दोस्ती बढ़ने लगी। निहारिका कभी भी इला के घर नहीं गई थी, बस बाहर से आवाज लगा देती या वह बाहर खड़ी मिल जाती दोनों साथ निकल पड़ते। इस तरह से समय बीतता गया। एक दिन निहारिका इला के घर के सामने हार्न रही थी, काफी इंतजार के बाद भी वह नहीं आई तो वह गाड़ी से उतर कर उसके घर की कॉल बेल बजाई। अंदर से उसकी माँ ने निकल कर कहा आज नहीं जायेगी, तबियत खराब है।

निहारिका कॉलेज चली गई ।

लौटते समय उसने सोचा जरा इला की तबियत पूछती चलूँ कैसी है?

वह इला के घर रूकती है, अंदर से उसकी माँ निकल कर आती हैं, वह और उसके को ही लिविंग रूप में बैठने को कहकर अंदर चली जाती हैं। थोड़ी देर में इला की छोटी बहन शीला पानी लेकर आती है। पहली बार ही देखा था कभी पहले घर के अंदर नहीं आई।

पूछा इला कैसी है? वह तो ठीक है।

सुबह तो आँटी जी कह रही थी कि खराब है। शीला ने बताया कि उसकी नहीं उसकी छह माह की बेटी नेहा की?

निहारिका ने कहा-कभी इला ने इसका जिक्र नहीं किया,

इतने में अंदर से इला की माँ भी आ गईं।

निहारिका ने कहा-आँटी मैं इला से मिल सकती हूँ। माँ-क्यों नहीं? जाओ अंदर पीछे के कमरे में। वह शीला के साथ अंदर चली गई। देखा एक बहुत सुदंर सी गोल मटोल बहुत बच्ची बिस्तर पर सोयी हुई है। उसे ही तेज बुखार है। इला बहुत चिंतित है। निहारिका थोड़ा संकोच करते हुए बोली -अब गुड़िया कैसी है?

इला-ठीक है, सुबह बहुत तेज बुखार था, मैं इसे डॉ. के पास ले गई थी, दवा दे दिया है। पट्टी भी किया अब कुछ कम है पर मुझे चिंता हो रही है।

निहारिका ने कहा चिंता मत करो सब ठीक हो जायेगा।

अच्छा मैं चलती हूँ, इला ने कहा मैं तीन चार दिन कॉलेज नहीं जा पाऊंगी।

निहारिका घर आ जाती है पर उसके मन मस्तिष्क में बार-बार गोल मटोल प्यारी सी गुड़िया का फूल सा मासूम चेहरा घूम रहा था। कभी इला ने इस बारे में कोई बात नहीं की, न ही उसकी बातों से महसूस हुआ कि उसकी शादी हो गई है। निहारिका सोचने लगी हमारे बीच पढ़ाई के सिवा कभी कोई बात नहीं हो पायी। ओह मैंने भी तो अपने बारे में कुछ नहीं बताया। मेरी ससुराल अमेठी में है। शादी को छः बरस हो गये पर मैं अब तक माँ नहीं बन पायी। परिवार वाले तो कभी कुछ नहीं कहते पर अंदर ही अंदर मुझे अकेलापन महसूस हो रहा था। पति को काम के सिलसले में ज्यादातर बाहर ही जाना पड़ता, ऐसे में मैंनें सोचा क्यों? आगे पढ़ाई की जाय। एम.ए. भी कर चुकी थी, निहारिका कुछ दिनों के लिए अपने मायके आयी हुई थी, मन कहीं लग नहीं रहा था, उनके माता-पिता ने कहा तुमको पढ़ना अच्छा लगता है, क्यों न तुम एल.एल बी. कर लो, अभी फार्म भी भरे जा रहे हैं, मैं रक्षाबंधन पर आई हुई थी, इस तरह से दोबारा पढ़ाई की शुरूवात हुई वहीं पर इला से मुलाकात हुई, इला के बारे में जानने के लिए उसका मन बेचैन हो रहा था, साथ ही

उस गोल मटोल गुड़िया के लिए भी। एक दिन निहारिका इला को कॉलेज के लिए बुलाने गई तो पता चला कि वह अपनी गुड़िया को टीका लगवाने गई हुई है। इला की माँ ने अंदर बैठने को कहा। निहारिका बैठक में इला का इंतजार कर रही थी। आँटी जी भी उसके पास ही बैठ गईं। पानी व साथ में कुछ मीठा, नमकीन भी मँगवाया। खाते हुए निहारिका ने बात शुरू की, कितनी कितनी प्यारी है इला की गुड़िया।

आँटी ने एक लंबी साँस लेते हुए कहा ना जाने आगे क्या होगा इसका? अभी तो हम लोग हैं, निहारिका ने पूछा, ऐसा आप क्यों कह रही हैं क्या हुआ...?

आंटी ने बताना शुरू किया, इला पढ़ने में बहुत अच्छी थी व खूबसूरत भी। हमने इसके लिए लड़का देखा अपनी ही बिरादरी का, बैंक में काम करता है विदशा में,.. माता पिता यहीं रहते हैं। हमारे ही रिश्तेदारों ने यह लड़का बताया हमें भी वह बहुत अच्छा लगा। शादी हो गई केवल चार माह ही मेरी इला रह पायी, उन लोगों ने बहुत सताया मेरी बेटी को तब इतना फोन की सुविधा भी नहीं थी। विदिशा साथ ले गये व साथ ही माता-पिता भी गये कि नई बहू है थोड़ा साथ रहेंगे। बेटे-बहू के लिए अच्छा रहेगा, लेकिन उनके मन में कुछ और ही चल रहा था। वो लोग दहेज के लिए तंग करते, दिन भर काम खाना-पीने के नाम पर दो रोटी व थोड़ी सी सब्जी दी जाती। एक समय चाय बस। हम पूछते तो कहती-सब ठीक है यहाँ, पर इला से ज्यादा बात भी न हो पाती। एक दिन मेरा मन बहुत घबरा रहा था इसके पिता व मैंने विदशा जाने के लिए सोचा, चलो इला से मिल आयें। इला के घर पर पहुंचे। करीब एक घंटे की औपचारिकता के बाद हमने कहा इला कहाँ है, बोले-दूसरे कमरे में ।

हम मिल सकते हैं!

बोले हॉ! जब इला को देखा तो हम हैरान हो गये यह क्या?

इला ने कुछ भी नहीं कहा, बस रोये जा रही थी। बमुश्किल हमने उसे चुप कराया। इला ने सारी बात बतलायी कैसे वे लोग तंग करते, मारते हैं , सास-ससुर व पति भी। पेट में यह गुड़िया थी, इला की हालत बहुत खराब हो गई थी। उनके साथ हमारी काफी कहा सुनी हुई, हम लोग इसे साथ लाये, उनके खिलाफ दहेज का केस दर्ज करवाया।

यह सब सुनकर मैं बहुत दुखी हो गई। इतनी कम उम्र में इतना कुछ सहा है इला ने।

तभी वह बहुत खामोश रहती है, लेकिन अंदर से मजबूत है। नेहा जब पेट में चार माह की थी तब से नाना-नानी के पास ही है। उसके जन्म होने पर उसके परिवार वालों को खबर की किया गया। न तो कोई देखने आया न ही हाल पूछा। इला इन सबके बीच काफी टूट चुकी थी, लेकिन वह जब नेहा को देखती तो माँ की ममता फूट जाती। मन से कहती मुझे इसके लिए हिम्मत करना है। तब से निहारिका व इला बहुत अच्छी सहेलियाँ हैं। पढ़ाई के बाद इला अपने माता-पिता के साथ रहते हुए, वकालत कर रही है। निहारिका भी अपने शहर वापस आ गई। पर उनका सम्पर्क बना रहा। एक दूसरे के बारे में हाल-चाल पूछते रहते। इधर निहारिका को भी बहुत दिनों बाद बेटा हुआ। इला की बिटिया अब इंजीनियरिंग कर रही है। पढ़ाई में वह बहुत तेज है। इस समय वह पुणे में है। इला ने अपनी सारी खुशी बस नेहा में ही समेट रखी है, यह मेरे जीने की वजह है। नेहा बहुत अच्छा गाती भी है कभी-कभी रेडियो पर उसके कार्यक्रम आते रहते हैं। बहुत होनहार व समझदार है नेहा। इला अब जीवन की हर लड़ाई नेहा के लिए, हार नहीं मानूंगी।

अब हम दो लोग शामिल हैं, मैं और नेहा। नेहा को उसके चुने हुए मुकाम तक पहुंचाना होगा, तब तक मुझे भी चलना होगा साथ-साथ मंजिल की ओर।

नकली दरोगा

डोमारू अपने बेटे सहदेव को अच्छी नौकरी में देखना चाहता था। हमेशा कहता है बेटा जो तू कुछ बन जाएगा तो परिवार का हाल सुधर जाएगा, तेरी बहनों की अच्छे घरों में शादी करा देंगे। घर का खर्च तो किसी तरह खेती से चल रहा है पर शादी ब्याह जैसे खर्च, मुश्किल है। सहदेव दिन रात इसी चिंता में रहता कि यह सब कैसे पूरा होगा? माँ-पिताजी को कैसे समझाऊं कि सरकारी नौकरी लगना बड़ा कठिन है। पर डोमारू हमेशा उसे सरकारी नौकरी ही करने के लिए दबाव डालता। सहदेव ने हाँ तो कर दिया लेकिन यह काम कठिन था। उसने नौकरी चयन आयोग में परीक्षा भी दी लेकिन असफल रहा। इधर डोमारू उठते बैठते पूछता अबकी तो तू दरोगा बन जाएगा? हाँ! सहदेव नहीं जानता था कि यह हाँ उसकी जिंदगी बदल देगा। उस दिन खाने बैठा ही था कि पिताजी ने कहा मंगतराम के लड़के की सरकारी नौकरी लग गई है। तेरी परीक्षा का परिणाम कब आएगा? सहदेव-दो दिन बाद पता चलेगा। दो दिन बाद सहदेव ने पिता को टालने के लिए कह दिया कि नौकरी पक्की

चाहिए तो तीस हजार रुपये लगेंगे। डोमारू कुछ सोचते हुए- आज के जमाने में नौकरी मिलना ही कठिन है फिर तेरा तो दरोगा में हुआ है। मैं अपना कोने वाला खेत बेचकर आठ दिन में तुझे तीस हजार रुपये दूंगा। उसे इस बात की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। रात भर वह परेशानी में जगा रहा।

भोर होते ही घर से निकल गया। अब उसे किसी ऐसे आदमी को ढूंढना था जो उसे रुपये लेकर ऐसी नौकरी में भर्ती करा दे। सहदेव लंबा तो था, लेकिन उसका शरीर इतना मजबूत नहीं था कि सीना नाप, वजन तय माप के हिसाब से पूरा हो। मतलब दरोगा की नौकरी तो उसे नहीं मिल सकती। उसे तो कोई और काम ही करना पड़ेगा। घर जाते ही पिता ने तीस हजार रुपये हाथ में थमा दिए। सहदेव की चिंता बढ़ गई। दूसरे दिन रुपए लेकर वह बाजार गया वहाँ से उसने दरोगा की वर्दी, जूते, बेल्ट खरीदा, नकली पहचान पत्र बनवाया और मन ही मन सारी योजना बना ली। घर आते ही सब को यह बात बता दी कि हाँ, मेरी दरोगा की नौकरी पक्की हो गई है, लेकिन मन में डर था कि कल से काम पर कहाँ जाऊंगा? सोचते -सोचते सुबह हो गई । उठते ही वह तैयार होकर जाने ही वाला था कि पिता ने पूछा कहाँ पर जाना है?

सहदेव-मेरी गोल बाजार बस स्टैंड पर ड्यूटी लगी है, जो यहां से दस किलोमीटर दूर है, इसलिए मैं रोज सुबह काम पर जल्दी निकल जाया करूँगा। बस वह तैयार होकर गोल बाजार की ओर निकल पड़ा। बस में बैठते ही कंडक्टर ने उसे सलाम किया कहा-साहब नमस्कार ! और बैठने के लिए आगे की सीट की ओर इशारा किया। उसे बहुत अच्छा लगा। बस स्टैंड पर उतर कर वह पहले चाय की दुकान पर गया सोचा एक कप चाय पीकर थोड़ा स्थिति का जायजा ले लूँ। चाय पीते ही जैसे उसने पैसे आगे बढ़ाएं चाय वाले ने कहा- साहब आप से क्या पैसा लूंगा?

बस उसे समझ में आ गया, आगे क्या करना है? आस-पास उसे कोई दूसरा दरोगा भी नहीं दिख रहा था। अब वह बस में चढ़ने और उतरने वालों से ठगी करता, पैसा वसूलता। किसी की गाड़ी पकड़ता, कहता हेलमेट नहीं लगाया, गाड़ी का पेपर कहाँ है? बस इंतजाम हो जाता। लोगों का झगड़ा-झंझट निपटाता, झूठी शिकायत लिखता और पैसा लेकर रफादफा करवा दूँगा ऐसा कहता। सब्जी वाला रोज की सब्जी दे देता। धीरे-धीरे इस नाटक को उसने असल जिंदगी का हिस्सा बना लिया। कमाई भी और रुतबा भी, दोनों। चार-पाँच महीने में उसने पिता के तीस हजार रुपये लौटा दिए। बहनों की शादी के लिए पैसा इकट्ठा करने लगा।

डोमारू घमंड से कहता-बेटा हो तो सहदेव जैसा! साल बीते उसने बहनों की अच्छी जगह शादी कर दी। डोमारू सहदेव के लिए भी लड़की देखने लगा।

अब तो बिना वर्दी के भी लोग उसे दरोगा साहब बुलातेउसे बड़ा अच्छा लगता। उसी दौरान एक दिन बस स्टैंड पर पुलिस के कई बड़े साहब पहुँचे, उन्हें यह खबर थी कि कोई बड़ा आतंकवादी भेष बदलकर शहर में आ रहा है, कई दिनों तक पुलिस का कड़ा पहरा लगा रहा, सभी के पहचान पत्र की जाँच हो रही थी। उसे देखकर सहदेव डर गया, सोचने लगा कहीं पकड़े गए तो सीधा जेल जाना पड़ेगा। उसने तय किया कि आज से वह ये काम नहीं करेगा। घर पहुँच कर उसने पिता से कहा-आज मैंने नौकरी छोड़ दी है, दिनभर चोरों, बदमाशों से घिरा रहना मुझे अच्छा नहीं लगता। अब मैं कोई दूसरी नौकरी करूँगा। डोमारू सिर पर हाथ रखकर उकड़ू बैठ गया। सहदेव दुखी था पर वह सीधी सादी नौकरी करेगा यह प्रण कर चुका था। दूसरे दिन से वह नौकरी की तलाश में निकल पड़ा। उसे चौकीदार की नौकरी मिली, तनख्वाह तो दस हजार महीना, लेकिन डर बिल्कुल नहीं।

वीर बाजार

दीपांशी को आज बहुत दिन बाद समय मिल रहा है, पहले जहाँ नौकरी करती थी वहाँ वीर वार को छुट्टी होती थी। वह अपने सप्ताह भर के काम इस दिन निपटाने की कोशश करती, साथ ही यहाँ लगने वाली सप्ताहिक बाजार से जरूरी चीजें भी अपने लिए लेती। मूलत: वह हिमाचल प्रदेश की है, उसने ऐसी बाजार यहीं आकर देखा, उसको इस शहर में पंद्रह साल हो गये। इतना बड़ा बाजार लगता है, वहाँ क्या नहीं मिलता। तरह-तरह के नये से नये फैशन के कपड़े, बरतन, किचन का सामान, सजावट का सामान, बिजली का सामान, छोटे बच्चों की स्टेशनरी का सामान। इस बाजार की सबसे बड़ी खूबी यह कि यहाँ बड़ी दुकानों व बड़े -बड़े माल से बहुत ही कम कीमत पर सामान मिलता है। यह शाम के चार बजे से रात के दस बजे तक लगती है। सब्जी, फल आदि भी इस दिन बाजार में खूब सस्ती होती, दिल्ली में हर ऐसी भरी सी बाजार सप्ताह में एक दिन सजती है। फैशन की चीजें व महिलाओं के मेकअप का सामान, आर्टिफिशियल ज्वैलरी तो बस देखते ही बनती। अरे जनाब नजर है कि हटने का नाम ही न लेती है। खरीदने से भी ज्यादा इसे देखने में आनंद आता। दीपांशी खुश है क्योंकि चार दिन की ऑफिस की लगातार छुट्टी

पड़ रही, इसी बीच यह बाजार भी लगेगा। नये ऑफिस में रात के नौ बजे तक घर आना होता है। फिर बाजार जाने का समय नहीं मिल पाता। आज तो मैं अपनी सारी लिस्ट साथ लेकर जाऊँगी। अपनी सहेली रितु, शशि को भी फोन करके बुला लेती हूँ, सब साथ होंगे तो मिलना भी हो जायेगा और शापिंग भी। बहुत दिन हो गये सहेलियों के साथ मौज मस्ती किए। आज हम सब छोले-भटूरे व गोलगप्पे मीठी सोंठ के साथ खायेंगे और ठंडा-ठंडा, खट्टा-मीठा पानी भी पीएँगे। यह सब सोच कर दीपांशी मन ही मन बहुत खुश हो रही है। साथ ही यह भी कि इस बाजार में कितनी सस्ती कीमत पर सामान होता है आदमी अपनी जरूरत की चीजें खरीद सकता है, इसके लिए बहुत दूर नहीं जाना पड़ता। यह आस पास ही लगती है सुबह नौ बजे से ही इतनी भीड़ होती है इस बाजार में, कुंभ के मेले जैसी, गरमी के मौसम में तो पूछो मत बच्चों की छुट्टी होती है। बाहर से घूमने आने वालों की भी भीड़। यहाँ खरीदने से भी बढ़िया इसे घूम कर देखने में जो आनंद है वह बता पाना मुश्किल है। दीपांशी के चेहरे की खुशी बता रही है कि आज वह अपनी मन पसंद चीजें को खरीद कर कितनी खुश होगी। यह बाजार पहले के लगने वाले मीना बाजार, प्रदर्शनी की याद दिलाते हैं, साथ ही जो बड़ी दुकान में नहीं खरीद सकते, उनकी भी रोजी रोटी इस बाजार से पूरी हो जाती है। कुछ तो खड़े खड़े ही सामान बड़े ढंग से सजा कर हाथ में ही लिए बेचते हैं। बस इन बाजारों की रौनक देखते बनती है, लगता है कोई उत्सव सा हो। इससे कितनों का घर चलता है, सभी की इच्छाओं की पूर्ति भी। साथ ही बहुत संतोष भी। दीपांशी सभी अपनों के लिए कुछ न कुछ लेकर आएगी।

मोमोज कल्चर

सारिका मुखर्जी नगर में रहती है उसका बड़ा चार मंजिला घर है। पति के असमय चले जाने से तीनों बच्चों की परवरिश उसी के जिम्मे आ पड़ी है। पति प्राइवेट कंपनी में काम करते थे। उनके जाने के बाद मँहगाई के दौर में घर का खर्चा चलाना बड़ा मुश्किल हो रहा था। बच्चों की पढ़ाई लिखाई, कोचिंग, फीस कुल मिलाकर खर्चे ज्यादा थे। उसने सोचा इतना बड़ा घर है अगर घर के कुछ हिस्से को

मैं किराए पर दे दूँ तो मुझे घर बैठे कुछ आमदनी हो जाएगी। आस-पास आईएएस, पीसीएस व सिविल सर्विसेज की परीक्षा की तैयारी के लिये बहुत बच्चे आते हैं। उसने ऊपर की दो मंजिल पढ़ाई के लिए आये बच्चों को दे दिया। कुछ दिनों में उन बच्चों से कुछ अपनापन व जान पहचान बढ़ गई। मकान मालिक होने के कारण कभी कभी हालचाल पूछ लिया करती। वैसे तो उस एरिया में खाने पीने की चीजों की कोई भी परेशानी नहीं है। जगह-जगह पर ढाबे बने हैं। एक से एक छोटे बड़े रेस्तरां। घर जैसा तो नहीं पर पेट भर जाता है।

बच्चों से जब पूछो तो अक्सर यही जवाब होता आँटी मोमोज खाया है रात में खाने की भूख नहीं। कभी दिन का खाना नहीं खाया, कभी रात का। आसपास बहुत से मोमो के ठेले लगे रहते हैं, बस लड़के-लड़कियां भीड़ लगाए रहते हैं। चालीस रुपए में उनका पेट भर जाता है। लड़कियाँ अपने दोस्तों के साथ खूब मजे से मोमोज खाती हैं। घर का कभी मैं उन्हें कुछ दे देती तो वह कहते नहीं आँटी मसालेदार है। फिर कोक पीना पड़ेगा। उन्हीं में एक सुरेश भी है। एक दिन उसे पेट में तेज दर्द उठा, डॉ. को दिखाया गया। दवा से एक महीने ठीक रहा, फिर बीमार पड़ गया। उसी डॉ.को दिखलाया गया, उसने कुछ टेस्ट लिखे और कुछ दवायें भी। दो दिन बाद रिपोर्ट लेकर सुरेश डॉ. के पास गया।शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी होगई है। हीमोग्लोबिन आठ पर पहुंच गया है। डॉक्टर ने खाने पाने का ध्यान रखने को कहा और एंडोस्कोपी के लिए लिख दिया। एंडोस्कोपी की जांच के बाद पेट में इन्फेक्शन पाया गया। तब डॉक्टर ने उसके खाने पीने के बारे में पूछा- सुरेश ने बताया ज्यादातर मैं मोमोज ही खाता हूँ। इधर पढ़ाई की व्यस्तता के कारण मैंने कई बार मोमोज ही खाए। डॉ. ने कहा कभी-कभी तो ठीक है पर रोज के खाने में तुम लोगों को उसे नहीं खाना चाहिए। वह अनहाइजीनिक होता है। सब्जियां धोई भी नहीं जातीं। तुम पोषक आहार लो नहीं तो आगो चलकर समस्या हो सकती है। सारिका कहने लगी आजकल जिसे देखो बच्चे यही सब खा रहे हैं।

नयी युवा पीढ़ी शिक्षित होते हुए भी यह मोमोज कल्चर अपना कर अपने स्वास्थ्य को खतरे में डाल रहे हैं। यह हमारा भोजन नहीं है। शायद सस्ता है इसलिए

यह सब खा कर अपने को मार्डन समझते हैं। पढ़ाई-लिखाई जितनी जरूरी है उतना ही स्वास्थ्य भी। घर से दूर रहनेवाले पर हर बच्चे को यह समझना चाहिए। मोमो कल्चर हमारी युवा पीढ़ी के लिए नुकसानदायक है। कहीं भी खा लेना स्वास्थ्य को अनदेखा करना यह सही नहीं है। पुराने लोग ठीक कहते थे अच्छा स्वास्थ्य ही सच्ची संपदा है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - आरती तिवारी
जन्म - 15 जनवरी 1966, जिला - जौनपुर (उ.प्र.)
माता - श्रीमती गिरजा शुक्ला
पिता - श्री हरिप्रसाद शुक्ला
पति - श्री राजेन्द्र नाथ तिवारी
पुत्र - सनत तिवारी
शिक्षा - एम.ए. (समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र), बी.एड
एल.एल.बी., एन.डी.डी.वाई., फल संरक्षण (डिप्लोमा)
मो. - 9310015517, 8920771318
ई मेल - artitiwari1966@gmail.com
कार्यक्षेत्र - लोकायत पत्रिका (दिल्ली) में प्रबंधक के तौर पर 2007 तक, लेखन, सामाजिक कार्य
विधा - कविता, कहानी, लेख, लघुकथा, संस्मरण आलेख समीक्षा आदि।
प्रकाशन - संवेदना, लौट जा मन गॉव की ओर।
सम्मान - राजनीति शास्त्र में रजत पदक (गृह विज्ञान एवं क्रिमिनल लॉ - विशिष्टता)
वूमन आवाज अवार्ड 2018- अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन की ओर से।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-81-0
मूल्य- 55/-